उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु के जीवन की कुछ झलकियाँ

﴿ لمحات من سيرة عثمان بن عفان رضي الله عنه ﴾

[हिन्दी - **Hindi** - هندي]

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2009 - 1430

islamhouse.com

﴿لمحات من سيرة عثمان بن عفان رضي الله عنه﴾

« باللغة الهندية »

عطاء الرحمن ضياء الله

2009 - 1430

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين، والصلاة والسلام على المبعوث رحمة للعالمين، نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين، ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين، أما بعد:

अल्लाह तआला ने अपने सम्पूर्ण धर्म इस्लाम के सन्देश को अपने बन्दों तक पहुँचाने के लिए अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को चयन किया, और आप की संगति के लिए ऐसे साथियों (असहाब) को चुना जो ईश्दूतों के बाद सर्व श्रेष्ठ मनुष्य हैं, इस उम्मत के सबसे अधिक नेक दिल, सब से अधिक गहरे ज्ञान वाले, सबसे उचित कार्य करने वाले और तकल्लुफ से अति दूर हैं। जिन्हों ने अपने नबी के जीवन तथा उनकी मृत्यु के पश्चात अल्लाह के मार्ग में भर पूर जिहाद और संघर्ष किया। अल्लाह तआला ने उनके द्वारा दीन की और दीन के द्वारी उनकी मदद और सुरक्षा की और उन्हें सर्व धर्मों और उनके मानने वालों पर प्रभुत्ता प्रदान किया। अतः उन सहाबा किराम की जीवनियों और उनके महान कार्यों के विषय में उल्लेख करना वर्तमान काल में अनिवार्य हो गया है जिस में बिदअतियों और राफिज़ियों (शी'ओं) की ओर से इस धरती पर जन्मे सर्व श्रेष्ठ लोगों को गाली का निशाना बनाया जाता है।

उनमें प्रथम सूचि पर हिदायत याफ्ता (पथप्रदर्शित) खुलफाए-राशिदीन का नाम आता हैं जिन के विषय में अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : **"तुम मेरी सुन्नत और मेरे बाद हिदायत याफ्ता (पथप्रदर्शित) खुलफा-ए-राशिदीन की सुन्नत को दृढ़ता से थाम लो और उसे दाँतों से जकड़ लो।"** (अहमद, अबूदाऊद, तिर्मिज़ी, इब्ने मसजह)

खुलफा-ए-राशिदीन में सर्व प्रथम अबू बक्र सिद्दीक़, फिर उमर बिन ख़त्ताब, फिर उसमान बिन अफ्फान, फिर अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं। इस लेख में तीसरे खलीफा अमीरुल-मोमिनीन उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ियल्लाह अन्हु का उल्लेख किया जा रहा है।

उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु के जीवन की कुछ झलकियाँ

नाम:

आप का नाम उसमान बिन अफ्फान बिन अबिल आस बिन उमैया बिन अब्द शम्स बिन अब्द मनाफ है। आप का नसब अब्द मनाफ में रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिल जाता है।

कुन्नियत :

जाहिलियत के समय में आप की कुन्नियत अबू अम्र थी, फिर जब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी रुक़ैया से आप का एक बच्चा पैदा हुआ तो उस का नाम अब्दुल्लाह रखा और उसी पर आप की कुन्नियत 'अबू अब्दुल्लाह' हो गई।

लक़ब :

उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु का लक़ब जुन्नूरैन है, क्योंकि आप ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दो बेटियों से शादी की पहले रुक़ैया से फिर उम्मे कुलसूम से।

जन्म :

आप का जन्म आमुल-फील[१] के ६ वर्ष बाद (५७६ ई० में) मक्का में हुआ हुआ। और एक कथन के अनुसार आप का जन्म ताईफ में हुआ, आप रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से लगभग पाँच साल छोटे थे।

प्रतिष्ठाएं :

- ❖ उन दस लोगों में से एक हैं जिन्हें जन्नत की बशारत दी गई है।
- ❖ उन छः लोगों में से एक हैं जिन्हें उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बाद खलीफा नियुक्त करने के लिए मश्वरा करने की ज़िम्मेदारी सौंपी थी।
- ❖ उन पाँच लोगों में से एक हैं जिन्हों ने अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर इस्लाम स्वीकार किया।
- ❖ दोनों क़िब्लों की ओर नमाज़ पढ़ी।

---

[1] इस से अभिप्राय वह वर्ष है जिस में अब्रहा (जो एथोपिया के राजा नजाशी की ओर से यमन का गवर्नर था) मक्का में खाना काबा पर चढ़ाई करने के लिए आया था और अल्लाह तआला ने उसे और उसकी फौज को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। यह ५७१ ई० के प्रथम तिमाही में घटित हुआ।

❖ दो हिजरत किया।

❖ आपकी शहादत के द्वारा इस्लाम में सर्वप्रथम फित्ने का उदय हुआ।

❖ जब उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया तो उन्हें उनके चचा हकम बिन अबुल आस बिन उमैया ने रस्सी से बाँध दिया, और कहाः क्या तू अपने बाप के धर्म से विमुख होकर एक नया धर्म अपनाता है? अल्लाह की क़सम ! मै तुझे कभी नहीं छोड़ूँ गा यहाँ तक कि तू अपने इस धर्म को त्याग़ दे।'' ... उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा : (अल्लाह की क़सम ! मैं इसे कभी भी नहीं त्याग कर सकता और न इस से अलग हूँगा।... जब हकम ने अपने दीन पर उनकी दृढ़ता को देखा तो उन्हें छोड़ दिया।

❖ अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसमान बिन अफ्फान को हुदैबिया के दिन मक्का वालों के पास भेजा, क्योंकि मक्का में आप का घराना सब से सम्मान वाला था। बैअते-रिज़वान आप की अनुपस्थिति में पेश आई, तो अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने बायें हाथ को अपने दायें हाथ पर मार कर कहा : ''यह उसमान का हाथ है।''... इस पर लोगों ने कहा : (उसमान को मुबारक -बधाई- हो) ...

❖ उसमान बिन अफ्फान -रज़ियल्लाहु अन्हु- ने अपनी जान और माल के द्वारा दीन की मदद का कर्तव्य भरपूर निभाया, जैसाकि आप ने रूमा नामी कुवें को बीस हज़ार में खरीद कर उसे सद्क़ा कर दिया। और उसमें अपने डोल को मुसलमानों के लिए सार्वजनिक कर दिया। तथा मस्जिदे नबवी के विस्तार को पचीस हज़ार में खरीद लिया।

❖ सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अल्लाह के पैग़म्बर के साथ एक लड़ाई में थे, जिस में लोगों को कष्ट (फाक़ा) का सामना हुआ यहाँ तक कि मुसलमानों के चेहरों पर परेशानी और शोक प्रतीक होने लगे और मुनाफिक़ों के चेहरों पर प्रसन्नता दिखाई पड़ने लगी। जब अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दृश्य देखा तो फरमाया : **''अल्लाह की क़सम ! सूरज नहीं डूबे गा यहाँ तक कि अल्लाह तुम्हें रोज़ी भेज देगा।''** .. उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु को विश्वास हो गया कि अल्लाह और उसके रसूल की बात सच्च निकले गी, चुनाँचे उन्हों ने चौदह ऊँट उन पर लदे हुए खाने (राशन) के साथ खारीदे और उन में से नौ अल्लाह के रसूल को पेश कर दिए, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह देखा तो पूछा : **''यह क्या है?''** लोगों ने कहा : उसमान की ओर से आप को भेंट किया गया है। चुनाँचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चेहरे पर खुशी बिखर गई और मुनाफिक़ों के चेहरे शोक ग्रस्त

हो गए, फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने दोनों हाथ उठाए यहाँ तक कि आपके बग़ल की सफेदी दिखाई देने लगी, और आप ने उसमान के लिए ऐसी दुआ की कि इस से पहले और न ही इसके बाद इस प्रकार की दुआ किसी और के लिए नहीं सुनी गई, आप ने फरमायाः ''ऐ अल्लाह तो उसमान को (और अधिक) प्रदान कर, ऐ अल्लाह उसमान के साथ ऐसा कर।''

❖ आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे पास आये और कुछ गोश्त देखकर पूछा : **''यह किस ने भेजा है?''**... मैं ने कहा : उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु ने। फिर मैं ने देखा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दोनों हाथ उठा कर उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए दुआ कर रहे हैं।

❖ उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु ने ६५० ऊँटों और ५० घोड़ों के द्वारा जैशुल उस्रह (तबूक की लड़ाई जो बहुत कठोर समय और तंगी की अवस्था में पेश आई थी इसलिए उसकी फौज को जैशुल उस्रह कहा गया है) को तैयार किया, तथा जैशुल-उस्रह की तैयारी के समय उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक हज़ार दीनार लेकर आए और उसे आप के सामने बिखेर दिया। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसे उलटने-पलटने लगे और दो बार फरमायाः **''उसमान आज के बाद कुछ भी करें उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचे गी।''**

❖ तथा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके बारे में फरमाया : **''क्या मैं उस आदमी से हया न करूँ जिस से फरिश्ते (भी) हया करते हैं।''**

❖ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी बेटी के पास आए और वह उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के सिर को धो रही थीं तो आप ने फरमाया : **''ऐ प्यारी बेटी! अबू अब्दुल्लाह के साथ अच्छा व्यवहार किया कर, क्योंकि मेरे सहाबा में इनके आचार सब से अधिक मेरे समांतर हैं।''**

❖ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु को वह्य लिखने के लिए विशिष्ट कर लिया था, तथा आप के कारणवश क़ुरआन की कई आयतें उतरीं, समस्त सहाबा ने आप की प्रशंसा की है, आपकी बरकतें और करामतें बहुत अधिक हैं, तथा उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु सुन्नत के बड़े पाबन्द थे और बड़े तहज्जुद गुज़ार थे।

❖ आप रज़ियल्लाहु अन्हु के समय काल में धन की बाहुल्यता हो गई थी, यहाँ तक कि लौंडी अपने वज़न के बराबर पैसे से बेची गई, घोड़ा एक लाख में और खजूर का पेड़ एक हज़ार दिरहम में बेचा गया। आप ने लोगों के साथ लगातार १० हज्ज किए...

आप रज़ियल्लाहु अन्हु का इस्लाम स्वीकार करना :

उसमान बिन अफ्फान रज़ियल्लाहु अन्हु जाहिलियत के समय काल में एक सज्जन धन्वान व्यक्ति थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैग़म्बर बनाए जान के थोड़े ही समय पश्चात आप ने इस्लाम स्वीकार किया, इस प्रकार आप रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम की ओर पहल करने वालों (यानी सर्व प्रथम इस्लाम लाने वालों) में से थे। तथा आप पहले वह व्यक्ति हैं जिस ने अपनी पत्नी रुक़ैया बिन्त रसूलिल्लाह - सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- के साथ हब्शा की ओर पहली और दूसरी हिजरत की।

ख़िलाफत :

उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु तीसरे खलीफ-ए-राशिद हैं, जिन से मुसलमानों ने उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की मृत्यु के बाद २३ हिजरी में बै'अत की।

जिस दिन उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु को खलीफा नियुक्त किया गया उस दिन उन्हों ने उनके खलीफा बनाए जाने का विरोध करने वाले कुछ लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा : (अल्लाह की हम्द व सना (प्रशंसा व गुणगान) के बाद, अल्लाह तआला ने मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सत्य के साथ पैग़म्बर बनाकर भेजा तो मैं उन लोगों में से था जिन्हों ने अल्लाह और उसके रसूल की बात को स्वीकार किया, तथा मैं ने दो हिजरतें कीं और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बै'अत की, अल्लाह की क़सम! मैं ने आप से धोखा नही किया और न आप की अवज्ञा की यहाँ तक कि अल्लाह ने आप को मृत्यु दे दी, फिर इसी प्रकार अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु, फिर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का आदेश पालन करता रहा (उनका विरोध नहीं किया) फिर मुझे खलीफा बनाया गया, तो क्या मुझे उसी प्रकार का अधिकार नहीं होना चाहिए जैसाकि इन लोगों के लिए था ?!

इस्लामी फुतूहात :

उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु की खिलाफत के दौरान अल्लाह तआला ने इस्कनदरिया, फिर साबूर, फिर अफ्रीक़ा, फिर कुबरूस, और इनके अतिरिक्त अन्य छेत्रों पर विजय प्रदान किया।

उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत :

मिस्र, कूफा, और बसरह के कुछ लोग एकत्र हुए और उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए, आप ने उनसे अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लिया, उन्होंने बीस

या चालीस दिन तक आपके घर को घेरे रखा, इस मुद्दत के दौरान आप उनकी ओर झाँकते और उन्हें इस्लाम में अपनी उन चीज़ों की जिन में आप को पहल प्राप्त है, तथा अपनी प्रशंसा और जन्नती होने की शहादत पर आधारित हदीसें याद दिलाते थे। चुनाँचे बलवाई अबू हज़्म अन्सारी के घर से आपके घर में घुस गए और आप को शहीद कर दिया इस हाल में कि क़ुरआन मजीद आप के सामने था जिस पर खून के छींटे पड़े, यह घटना ३५ हिजरी में मदीना शरीफ के अन्दर आपके घर में पेश आई। आप रज़ियल्लाहु अन्हु बक़ीअ् में दफन किए गए। आपकी खिलाफत ११ वर्ष ११ महीने रही।